संपादक का पत्र

प्रभु की स्तुति हो। रोज़ ऑफ़ शेरोन चर्च मिनिस्ट्री में अपने बीसवें वर्ष में, मैं प्रार्थना करती हूँ कि मेरे अच्छे पिता अपने सभा की देखभाल करने में मेरा मार्गदर्शन और अगुवाई करते रहेंगे, जैसा कि उन्होंने अतीत में किया है। वह एक विश्वास योग्य पिता है, जो हमारी पूरी जिम्मेदारी लेने के लिए हमेशा तैयार रहते है, बशर्ते हम खुद को पूरी तरह से उनके प्रति समर्पित कर दें।

यीशु, हमारे मुक्तिदाता, हमें हमारे पापों से मुक्ति दिलाने और उन सभी को बचाने के लिए इस दुनिया में भेजे गए थे जो उस पर विश्वास करते हैं। फिर भी, हम इतने अज्ञानी हैं कि हमें लगता है कि वह हमें देखते या सुनते नहीं है। हमारे संकट और हताश समय में, हम भूल जाते हैं कि हमारे प्रभु का हाथ छोटा नहीं है, और न ही उनके कान बहरे हैं। यशायाह 59:1 ''सुनो, यहोवा का हाथ ऐसा छोटा नहीं हो गया कि उद्धार न कर सके, न वह ऐसा बहिरा हो गया है कि सुन न सके;''

सृष्टि के आरंभ में परमेश्वर ने इस संसार की सुन्दर रचना की। फिर उन्होंने पुरुष और स्त्री की रचना की, ताकि वे उनकी बनाई सभी अद्भुत चीज़ों का आनंद उठा सकें। हालाँकि, जिस क्षण मनुष्य के माध्यम से पाप इस दुनिया में आया, अंधकार आ गया और इस अंधकार ने मनुष्य और परमेश्वर के बीच एक बाधा पैदा कर दी, जिसके कारण, परमेश्वर का वचन स्पष्ट रूप से बताता है कि हमारा प्रभु परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को नहीं सुनता और न ही उत्तर देता है। यशायाह 59:2, ''परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुख तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।''

बाइबिल, बार–बार समझाता है कि परमेश्वर हमारी सभी प्रार्थनाओं का उत्तर तभी देंगे जब हम अपना जीवन उनकी इच्छा के अनुसार जिएंगे, क्योंकि उनके बिना, कोई दूसरा रास्ता नहीं है। हमारे जीवित परमेश्वर के अलावा किसी अन्य माध्यम से प्राप्त प्रत्येक आशीष थोड़े समय का ही है। यह वचन भजन संहिता 97:7 में कहता है, ''जितने खुदी हुई मूर्तियों की उपासना करते और मूरतों पर फूलते हैं, वे लज्जित हों; हे सब देवताओ, तुम उसी को दण्डवत् करो।'' जितना हम अपने परमेश्वर को प्रसन्न रखेंगे, वह हमें उतना ही ऊँचा और ऊँचा उठाएंगे। हमें अपने अनन्त

पिता से आशीष प्राप्त करने के लिए उन पर विश्वास करना चाहिए और आखें बंद करके भरोसा करना चाहिए।

राहाब एक वेश्या थी जिसने यरीहो की जासूसी करने के लिए भेजे गए दो इस्राएलियों को छुपाया था। उसने खुले तौर पर घोषणा की कि उन्होंने सुना है कि कैसे प्रभु ने इस्राएलियों के लिए लाल समुद्र का जल सुखा दिया था, और प्रभु ने उनके जीवन में कैसे शक्तिशाली चमत्कार किए थे; इस कारण अन्यजाति परमेश्वर का भय मानने लगे। यहोशू 2:9–10, ''इन पुरुषों से कहने लगी, "मुझे तो निश्चय है कि यहोवा ने तुम लोगों को यह देश दिया है, और तुम्हारा भय हम लोगों के मन में समाया है, और इस देश के सब निवासी तुम्हारे कारण घबरा रहे हैं। क्योंकि हम ने सुना है कि यहोवा ने तुम्हारे मिस्र से निकलने के समय तुम्हारे सामने लाल समुद्र का जल सुखा दिया। और तुम लोगों ने सीहोन और ओग नामक यरदन पार रहनेवाले एमोरियों के दोनों राजाओं का सत्यानाश कर डाला है।''

इसी तरह, हमारे जीवन में भी, दुनिया के लोगों को आश्चर्यचकित होना चाहिए जब वे प्रभु के बच्चों और उनके जीवन में उनके द्वारा किए गए कार्यों को देखते हैं।

इसलिए, परमेश्वर के प्रिय बच्चों, अनन्त जीवन पाने के लिए हमें अपने प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास और भरोसा रखना चाहिए, जिन्हें हमारे पापों का प्रायश्चित करने और हमें अनन्त जीवन का आशीष देने के लिए इस दुनिया में भेजे गए थे; क्योंकि, वास्तव में उन्हें जानने और उन पर विश्वास किए बिना, कोई अनन्त जीवन नहीं है। यूहन्ना 17:3 ''और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें।''

हमारे जीवित प्रभु यीशु आपमें से प्रत्येक को अपने–अपने जीवन में आशीष देते रहें, जैसे आप उनकी छाया में बने रहें।

जब तक दुबारा मिलें,

पास्टर सरोजा म।

अब हम बाइबिल में तीन पर्वतों के बारे में देखेंगे। परमेश्वर, जो 'पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा' है, वही है; लेकिन जिन नामों से उन्हें जाना जाता है वे अलग–अलग हैं। इसी तरह पर्वत एक ही है, लेकिन नाम अलग–अलग हैं। आइए देखें कि अब्राहम ने इस पर्वत को क्या कहा। उत्पत्ति 22:11–14 ''तब यहोवा के दूत ने स्वर्ग से उसको पुकार के कहा, "हे अब्राहम, हे अब्राहम!" उसने कहा, "देख, मैं यहाँ हूँ।" उसने कहा, "उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा, और न उससे कुछ कर; क्योंकि तू ने जो मुझ से अपने पुत्र, वरन् अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा; इससे मैं अब जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है।" तब अब्राहम ने आँखें उठाईं, और क्या देखा कि उसके पीछे एक मेढ़ा अपने सींगों से एक झाड़ी में फँसा हुआ है; अतः अब्राहम ने जाके उस मेढ़े को लिया, और अपने पुत्र के स्थान पर उसे होमबलि करके चढ़ाया। अब्राहम ने उस स्थान का नाम यहोवा यिरे रखा। इसके अनुसार आज तक भी कहा जाता है कि यहोवा के पहाड़ पर उपाय किया जाएगा।'' परमेश्वर ने अब्राहम को कई वर्षों के बाद एक पुत्र के साथ आशीषित किया। अब उन्होंने अब्राहम से अपने पुत्र की बलि देने को कहा। अब्राहम बिना किसी झिझक के अपने बेटे की बलि देने को तैयार हो गया। यह वह महान विश्वास है जो अब्राहम को प्रभु परमेश्वर में था। क्या हम कभी ऐसा कर पाएंगे? नहीं, हम इसे कभी बर्दाश्त नहीं कर पाएंगे। ग्राहम स्टेंस परिवार को याद करें, जहां 1999 में मिशनरी ग्राहम को उनके दो बेटों के साथ उड़ीसा में जिंदा जला दिया गया था? उनकी पत्नी और बेटी भारत में कुछ वर्षों तक उनके दुःख और दर्द के बावजूद प्रभु की सेवा करती रहीं। इसी तरह, जब परमेश्वर ने अब्राहम से अपने बेटे की बलि देने के लिए कहा, तो अब्राहम ने कभी भी परमेश्वर से सवाल नहीं किया कि वह अपने बेटे को क्यों ले जा रहा है। अब्राहम चुपचाप अपने पुत्र इसहाक की बलि चढ़ाने के लिए तैयार हो गया। **मोरिय्याह पर्वत**, वह स्थान जहाँ यह घटित हुआ था, अब्राहम द्वारा ***'यहोवा यिरे'*** कहलाया, जिसका अर्थ है, *'यहोवा के पहाड़ पर उपाय किया जाएगा।'*

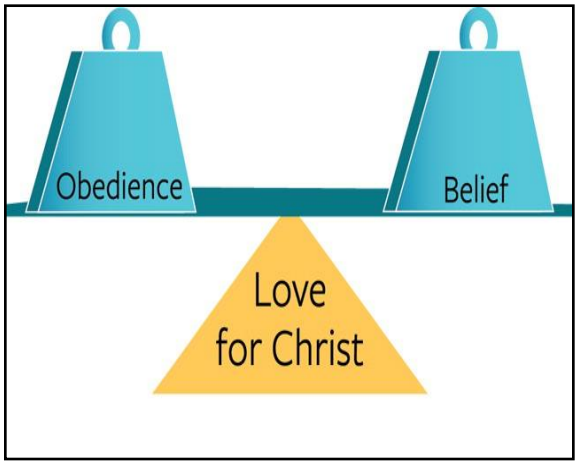

उत्पत्ति 22:14 ''अब्राहम ने उस स्थान का नाम यहोवा यिरे रखा। इसके अनुसार आज तक भी कहा जाता है कि यहोवा के पहाड़ पर उपाय किया जाएगा।''

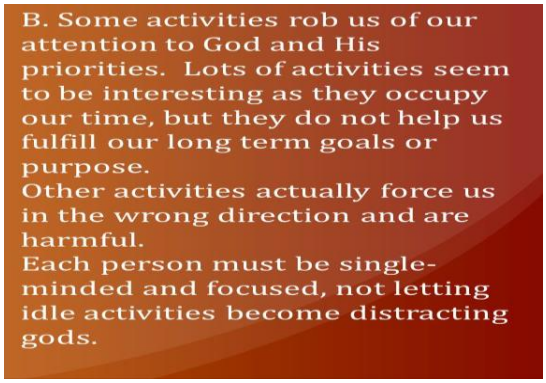

उत्पत्ति 22:12 ''उसने कहा, "उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा, और न उससे कुछ कर; क्योंकि तू ने जो मुझ से अपने पुत्र, वरन् अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा; इससे मैं अब जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है।" परमेश्वर ने अब्राहम से अपने बेटे की बलि देने के लिए क्यों कहा? यह परखने और देखने के लिए कि क्या उनके प्रति उसका भय सच्चा था। परमेश्वर हमारे जीवन की भी परीक्षा ले सकते है। वह हमें और भी अधिक आशीष देना चाहते है। यहोवा ने एलिय्याह को इस परिवार को आशीष देने के लिए विधवा के घर क्यों भेजा? ताकि भविष्य में उनके घर में कभी अन्न (आटा और तेल) की कमी न हो। प्रभु हमें कभी नहीं लूटेंगे; इसके विपरीत, वह हमें हमेशा बहुतायत से आशीष देंगे। यह बाइबिल में क्यों दर्ज है? ताकि हम इसे पढ़ें और ऐसी बड़ी घटनाओं के बारे में जानें। हमारा प्रभु कभी भी हमारी परीक्षा ले सकते है। हमारा प्रभु अब्राहम के हृदय को जानते थे, परन्तु उन्होंने अब्राहम की परीक्षा ली ताकि सारी मानवजाति को अब्राहम के प्रभु में विश्वास के बारे में पता चले। इसी तरह, हमारे प्रभु परमेश्वर हमारे बारे में बहुत कुछ जानते हैं। यद्यपि वह हमारी कलीसिया के बारे में जानते है, फिर भी वह कलीसिया के बारे में भविष्यवाणी क्यों करते है? ताकि दूसरे लोग विश्वास कर सकें और 'सत्य' को जान सकें। प्रभु

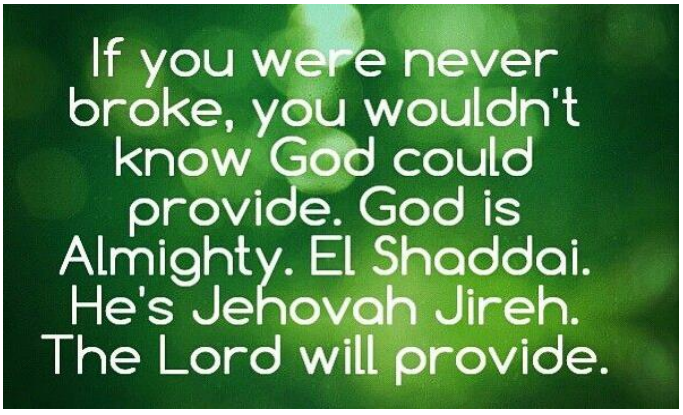

समय–समय पर हमारे चर्च को आशीष देना जारी रखेंगे और अपना काम करेंगे। परन्तु भविष्यद्वाणियां सब को बता दी जाती हैं, कि सब सदस्य भले परमेश्वर पर विश्वास करें। उसी तरह, परमेश्वर को अब्राहम के बारे में बोलने की ज़रूरत नहीं थी, लेकिन क्योंकि सभी मानव जाति को सच्चाई जानने की ज़रूरत है, यह पवित्र शास्त्र में दर्ज है। जब हमारा परमेश्वर हमसे कुछ माँगते है, तो वह हमसे कुछ लेने के लिए नहीं बल्कि हमें आशीष देने के लिए होता है। उत्पत्ति 22:13 ''तब अब्राहम ने आँखें उठाईं, और क्या देखा कि उसके पीछे एक मेढ़ा अपने सींगों से एक झाड़ी में फँसा हुआ है; अतः अब्राहम ने जाके उस मेढ़े को लिया, और अपने पुत्र के स्थान पर उसे होमबलि करके चढ़ाया।'' जब अब्राहम ने प्रार्थना में सिर उठाया तो उसने क्या देखा? प्रभु ने उन्हें बलिदान के लिए एक मेढ़ा दिखाया। इसलिए अब्राहम ने पर्वत का नाम *'यहोवा यिरे'* रखा, जिसका अर्थ है, *'यहोवा के पहाड़ पर उपाय किया जाएगा।'*

प्रेरित यूहन्ना कहता है यूहन्ना 1:29 में ''दूसरे दिन उसने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, ''देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है।'' यीशु *'परमेश्वर का मेम्ना'* है जो दुनिया के पापों को उठा ले जाते है। यूहन्ना ने यीशु की ओर देखा और घोषणा की कि यीशु को हमारे लिए इस दुनिया में भेजा गया था। उन्होंने घोषणा की, *'देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है।'* जब अब्राहम को परमेश्वर ने पर्वत पर अपने पुत्र का बलिदान देने से रोका, तो उन्होंने कितनी खुशी से *'यहोवा यिरे'* का नाम रखा होगा। यीशु को हमारे प्रत्येक पाप के लिए एक पर्वत पर बलिदान किया गया था। क्या हमारा हृदय आज घोषणा कर सकता है *'यहोवा यिरे?'* प्रभु के लिए हमारा विश्वास मजबूत होना चाहिए। दुर्भाग्य से, हमारा हृदय घृणा से भरा है और हमारी अपनी समझ के विचारों से भरा है, और हमारे पास इस दुनिया में अपने प्रभु के लिए समय नहीं है। हमारे प्रभु यीशु ने कहा है, *'मैं अपनी शांति तुम्हारे पास छोड़ता हूं'* इसलिए हमें किसी भी बात से व्यथित, चिंतित या परेशान नहीं होना चाहिए।

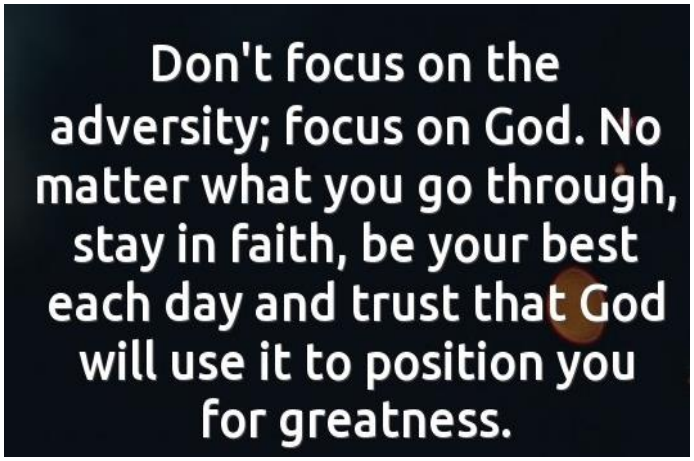

यीशु और उनके पिता पर विश्वास करें। फिर भी हमारा मन क्यों डगमगाता है और प्रभु पर नहीं टिकता? प्रभु का मन हमारे बारे में डगमगाता नहीं है, तो हमारा मन उनके बारे में क्यों डगमगाता है? प्रभु हमारी सेवा करने आए और उन्होंने इस धरती पर एक साधारण बढ़ई के परिवार में जन्म लिया। हमें क्रूस पर ध्यान केंद्रित रखना चाहिए और अपना मन परमेश्वर के मेमने पर रखना चाहिए। परमेश्वर ने हमारे सारे पापों को अपने ऊपर ले लिया है, हमें अपने बहुमूल्य लहू से धोया है, और हमें अपने लहू से खरीदा है। जब हमारा ध्यान कलवारी के क्रूस पर होगा, तो प्रभु हमारे खिलाफ आने वाले हर हथियार को नष्ट कर देंगे।

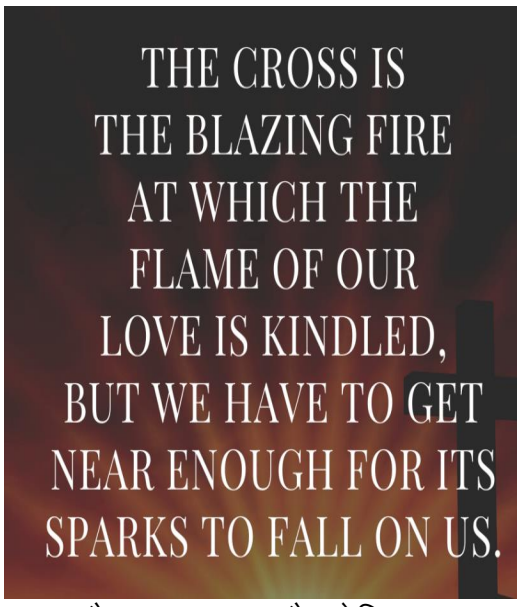

दूसरा पर्वत जिसके बारे में हमने पढ़ा वह निर्गमन 3:1 में है ''मूसा अपने ससुर यित्रो नामक मिद्यान के याजक की भेड़–बकरियों को चराता था; और वह उन्हें जंगल की पश्चिमी ओर होरेब नामक परमेश्वर के पर्वत के पास ले गया।'' **पर्वत होरेब** को यहां *'प्रभु का पर्वत'* नाम दिया गया है। पहाड़ एक है, लेकिन अलग–अलग लोग इसे अलग–अलग नाम देते हैं। प्रभु एक प्रभु है – पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। क्योंकि यीशु मांस और लहू में पैदा हुए थे, इसलिए उन्हें

अब्बा पिता का पुत्र कहा जाता है। तीसरे दिन, यीशु मृतकों में से फिर से उठे और हमारे बीच में बने रहे। उन्हें पवित्र आत्मा के रूप में जाना जाता है।

निर्गमन 4:27 ''तब यहोवा ने हारून से कहा, "मूसा से भेंट करने को जंगल में जा।" वह गया और परमेश्वर के पर्वत पर उससे मिला और उसको चूमा।'' हारून ने परमेश्वर के पर्वत, होरेब पर्वत पर मूसा से मुलाकात की। इसी पर्वत पर, परमेश्वर ने दोनों भाइयों, हारून और मूसा का मिलन भी कराया। निर्गमन 18:5 ''मूसा की पत्नी और पुत्रों को, उसका ससुर यित्रो संग लिए मूसा के पास जंगल के उस स्थान में आया, जहाँ परमेश्वर के पर्वत के पास उसका डेरा पड़ा था।'' मूसा प्रभु के पर्वत पर अपने पूरे परिवार से मिला– प्रभु का एक बड़ा आशीष। इसीलिए, शत्रु हमें परमेश्वर के पर्वत से विचलित करने का प्रयास करेगा। परमेश्वर के पर्वत पर, मूसा पहले परमेश्वर से मिला, फिर अपने भाई हारून से, और अंत में, अपने पूरे परिवार से। हमारा भी, यदि ध्यान केंद्रित रहें, तो पर्वत पर अपना सारा आशीष प्राप्त करेंगे। एक बार, जब प्रभु यीशु मंदिर में उपदेश दे रहे थे, तो उनका परिवार उन्हें खोजते हुए आया। उन्होंने उसे बाहर बुलाने के लिए एक संदेश भेजा। उस समय, यीशु ने क्या कहा? *"मेरी माता और मेरे भाई कौन हैं? जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई, और बहिन, और माता है।"*

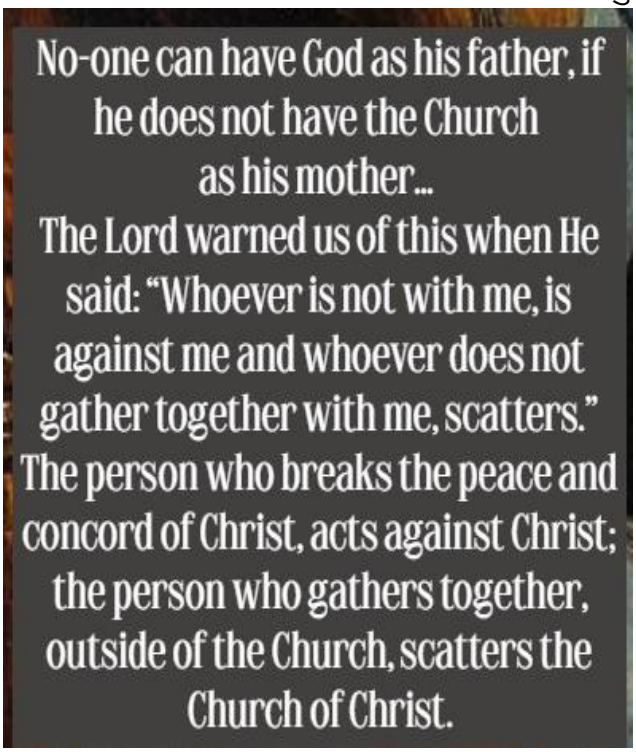

निर्गमन 24:13 ''तब मूसा यहोशू नामक अपने सेवक समेत परमेश्वर के पर्वत पर चढ़ गया।'' जब इस्राएली जंगल में यहोवा के विरूद्ध कुड़कुड़ा रहे थे, तब परमेश्वर ने पर्वत पर मूसा से बातें कीं। मूसा हमेशा प्रभु को देखने की इच्छा रखता था। निर्गमन 3:5 ''उसने कहा, "इधर पास मत आ; और अपने पाँवों से जूतियों को उतार दे, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है।'' परमेश्वर ने मूसा से कहा कि क्योंकि यह परमेश्वर का पर्वत (पवित्र पर्वत) है, इसलिए उसे अपने जूते उतारने होंगे और फिर परमेश्वर के पास आना होगा। मूसा ने इसी पर्वत पर परमेश्वर, अपने भाई हारून और साथ ही अपने परिवार के बाकी लोगों से मिला। परमेश्वर के पर्वत पर मूसा के साथ हर अच्छी चीज़ घटित हुई। यहां तक कि उसे यहां प्रभु की सेवा करने का मौका भी मिला। जब मूसा को इस्राएलियों को बंधन से छुड़ाने के लिए चुना गया था, तब परमेश्वर ने इसी पर्वत से मूसा से बात की थी। परमेश्वर के पर्वत पर, प्रभु ने मूसा के जीवन में यह बड़ा परिवर्तन लाया। जब परमेश्वर मूसा से मिला, तब वह 80 वर्ष का था। हमें जानना चाहिए कि जब प्रभु हमें अपनी महिमा के लिए उपयोग करना चुनते हैं तो उम्र उनके लिए कोई बाधा नहीं है।

रोमियों 1:15–16 ''अतः मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूँ। क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिये, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है।'' प्रभु की स्तुति और आराधना के लिए हमेशा तैयार रहें, क्योंकि हमें प्रभु के लिए 'कूड़ेदान' बनना चाहिए, और वे हमें उपयोग करे ऐसा कहना चाहिए। परमेश्वर ने मूसा को 80 वर्ष की आयु में उसकी सेवा करने के लिए चुना। क्या हम 80 वर्ष में कुछ कर सकते हैं? हम शायद उस उम्र में ठीक से चल भी नहीं पाएंगे. कल्पना कीजिए कि एक लीडर के रूप में मूसा को कैसे पूरे जोश और ऊर्जा के साथ लोगों के सामने चलना पड़ा। क्या उसने अधिक उम्र में उसे चुनने के लिए प्रभु से शिकायत की? जैसे ही इस्राएलियों ने अपने लीडर मूसा का अनुसरण किया, उन्होंने लाल समुन्द्र का सामना किया, जबकि उसी समय मिस्र की विशाल सेना उनका पीछा कर रही थी। क्या मूसा को अपने आगे लाल समुन्द्र और अपने पीछे मिस्र की सेना का डर था? नहीं, क्योंकि मूसा ने 'परमेश्वर के पर्वत' की ओर देखा, और विश्वास के साथ प्रभु को पुकारा, यह अच्छी तरह से जानते हुए कि प्रभु परमेश्वर जिसने उसे बुलाया था, वह उसे और इस्राएलियों को दुश्मन से भी बचाएगा। इस्राएली मूसा के विरूद्ध कुड़कुड़ाने लगे, परन्तु मूसा की दृष्टि परमेश्वर के पर्वत पर केन्द्रित थी। हमने उस अद्भुत चमत्कार को देखा है जो प्रभु ने उसके बाद इस्राएलियों को पार करने के लिए लाल समुन्द्र को विभाजित करके किया था।

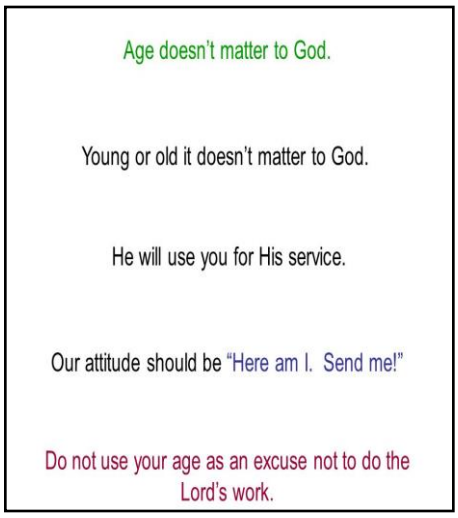

अब हम तीसरा पर्वत देखेंगे – **पर्वत कर्मेल,** 1 राजा 18:19–20 में ''अब दूत भेजकर सारे इस्राएल को और बाल के साढ़े चार सौ नबियों और अशेरा के चार सौ नबियों को जो ईज़ेबेल की मेज पर खाते हैं, मेरे पास कर्मेल पर्वत पर इकट्ठा कर ले।" तब अहाब ने सारे इस्राएलियों को बुला भेजा और नबियों को कर्मेल पर्वत पर इकट्ठा किया।'' माउंट कर्मेल में विशाल गुफाएँ थीं, और प्रभु के कई नबी इस पर्वत पर रहते थे। परमेश्वर कार्मेल पर्वत से प्रेम करते है, जैसा कि हम पढ़ते हैं श्रेष्ठगीत 7:5 में ''तेरा सिर तुझ पर कर्मेल के समान शोभायमान है, और तेरे सिर की लटें बैंजनी रंग के वस्त्र के तुल्य हैं; राजा उन लटाओं में बँधुआ हो गया है।'' बाल के चार सौ पचास भविष्यवक्ता थे जो राजा अहाब के आदेश पर कर्मेल पर्वत पर इकट्ठे हुए थे, जैसा कि भविष्यवक्ता एलिय्याह चाहते थे। एलिय्याह प्रभु परमेश्वर को बलि चढ़ाए गए बैल को जलाने में सफल रहा, जबकि बाल के भविष्यवक्ता बाल को बलि चढ़ाने में ऐसा नहीं कर सके। फिर बाल के भविष्यवक्ताओं ने भागने की कोशिश की, लेकिन नबी एलिय्याह ने इन सभी झूठे

भविष्यवक्ताओं को मार डाला। आज, एलिय्याह की मूर्ति तलवार के साथ स्थिर पर्वत कर्मेल के ऊपर है, जहां उसने बाल के नबियों को हराया था, जिससे यह विजय पर्वत बन गया।

जब हम प्रभु से कहते हैं, *'मेरा उपयोग करें,'* तो परमेश्वर अपनी सेवा के लिए हमारा अभिषेक करेंगे। मलाकी 4:5 ''"देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले, मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूँगा।'' कल्पना कीजिए कि वह कितना भयानक दिन था, जब बाल के भविष्यवक्ताओं को परमेश्वर के भविष्यवक्ता ने हरा दिया था। न्याय के दिन एक बार फिर धरती पर ये भयानक वक्त आएगा। हम दो विचारों में नहीं रह सकते. हमें एक परमेश्वर को चुनना होगा, और हम एक समय में अपने पैर दो नावों पर नहीं रख सकते। पर्वत कर्मेल पर, नबी एलिय्याह ने झूठे भविष्यवक्ताओं को हराया, और जीत सच्चे और शक्तिशाली जीवित परमेश्वर की थी। इसी तरह, न्याय का दिन भी तेजी से आ रहा है, तब हम अपने परमेश्वर द्वारा लिए गए निर्णयों को नहीं बदल पाएंगे। अब समय आ गया है जब हमें अपने जीवित परमेश्वर के लिए खड़ा होना चाहिए। अब परमेश्वर की कृपा और दया का समय है और हमें आज ही निर्णय लेना होगा। आज भी इस संसार के लोग वैसा ही आचरण करते हैं जैसा नूह के समय में किया करते थे, खाना–पीना, मौज–मस्ती करना और दूसरी जाति के बच्चों से विवाह करना। तब धरती पर पाप का बोलबाला था और आज भी वही स्थिति है। अब समय आ गया है कि हम अपने पापों से मन फिरा लें! जैसे परमेश्वर ने बाल के नबियों से लड़ने के लिए नबी एलिय्याह को भेजा था, हमारे अच्छे परमेश्वर ने आज नबी को वचन का प्रचार करने और अपने लोगों को बचाने के लिए उठाया है। प्रभु अपने बच्चों को सच्चाई सिखाने के लिए, उन्हें 'अभी!' बचाने के लिए नबियों का अभिषेक कर रहे हैं।

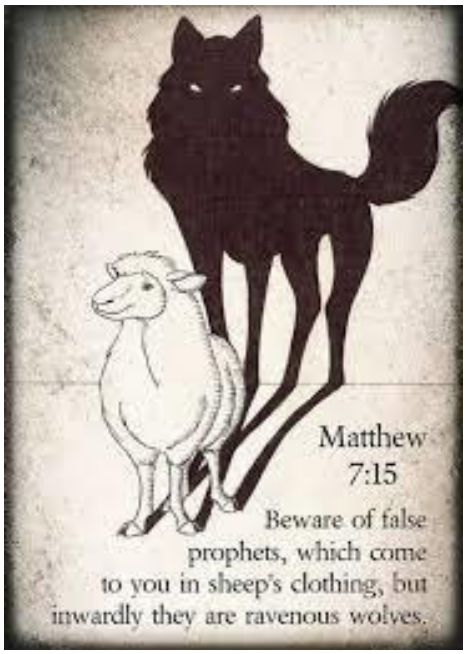

रोमियों 8:31–36 ''अतः हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है? जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों न देगा? परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर ही है जो उनको धर्मी ठहरानेवाला है। फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा? मसीह ही है जो मर गया वरन् मुर्दों में से जी भी उठा, और परमेश्वर के दाहिनी ओर है, और हमारे लिये निवेदन भी करता है। कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार? जैसा लिखा है, "तेरे लिये हम दिन भर घात किए जाते हैं; हम वध होनेवाली भेड़ों के समान गिने गए हैं।'' प्रेरित पौलुस उन लोगों से कहता है जो प्रभु को जानते हैं और उनसे प्रेम करते हैं, कि ऐसी कोई परीक्षा नहीं है जो हमें प्रभु से अलग कर सके।

उदासी, अन्याय, लड़ाई–झगड़े या दुःख की इन सभी विभिन्न परीक्षाओं में, हमें अपना ध्यान परमेश्वर के पर्वत से नहीं हटाना चाहिए। शैतान ने यीशु मसीह का ध्यान पिता परमेश्वर से हटाने की कोशिश की, लेकिन वह सफल नहीं हुआ। गतसमनी के वाटिका में, यीशु को पता था कि उनका अंत जल्द ही आएगा, और उन्हें वाटिका में धोखा दिया जाएगा। यीशु जानते थे कि उन्हें किस अपमान का सामना करना पड़ेगा, और उन्होंने अपने पिता से प्रार्थना की, *''हे पिता, यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले, तौभी मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो।''* परमेश्वर ने यीशु को ऐसा करने की शक्ति दी ताकि यीशु सब कुछ सहन कर सके और कलवारी के क्रूस पर विजय प्राप्त कर सके।

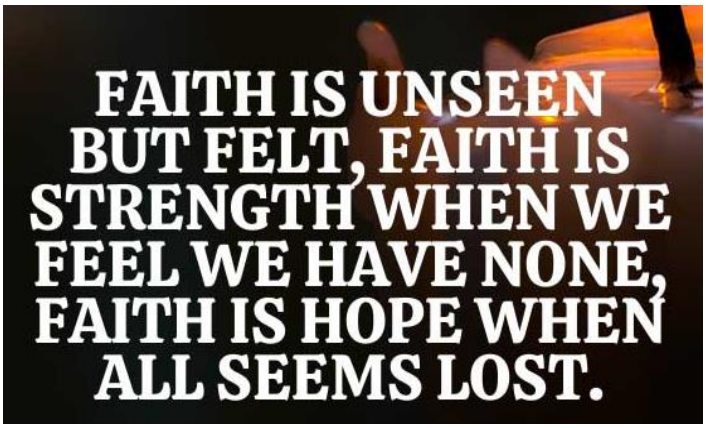

सोचिए, अगर हमारे जीवन में ऐसा कुछ घटित हो जाए। क्या हमारा ध्यान पर्वत पर रहेगा? हममें से कई लोग डरेंगे और भागेंगे, और कई लोग इस अवसर का उपयोग पीड़ा, दर्द और बलिदान से दूर रहने के लिए करेंगे। लेकिन जो लोग इस चुनौती पर विजय पा लेते हैं, न्याय के दिन यीशु सफेद घोड़े पर सवार होकर आएंगे और अपनी दुल्हनों को ले जाएंगे। परमेश्वर के दूत – साराप और करूब आपको लेने आएंगे। हमारा प्रभु परमेश्वर एक महान परमेश्वर है, और वह हमारे दिलों के हर इच्छा को जानते है।

मुझे क्रूस उठाना चाहिए और प्रभु की सेवा करनी चाहिए। वह अपने नबी को सब कुछ दिखाते है, और उनसे कुछ भी छिपा नहीं है। हमारा प्रभु वही है, और वह नहीं बदलते है। उनका प्यार हमारे लिए वैसा ही है। प्रभु परमेश्वर हमें न्याय के समय अपने सामने खड़ा करेंगे। मैं प्रभु के लिए केवल एक 'कूड़ादान' हूं। हमारा प्रभु परमेश्वर धर्मियों का न्याय करेंगे। उस दिन की कल्पना करें जब दो लोग एक साथ होंगे और एक को ले लिया जाएगा। हम न्याय के उस दिन का सामना कैसे करेंगे? जैसा कि हमने ऊपर रोमियों में पढ़ा है, *'यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है? कौन हमे मसीह के प्रेम से अलग करेगा? कुछ भी नहीं और कोई भी कष्ट हमें अलग नहीं कर सकता।'* इसलिए, आइए हम केवल प्रभु के पर्वत पर ध्यान केंद्रित करें, क्योंकि जब प्रभु हमें लेने आते हैं, तो हमें उनके पर्वत पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जहां उन्होंने अद्भुत कार्य किए हैं।

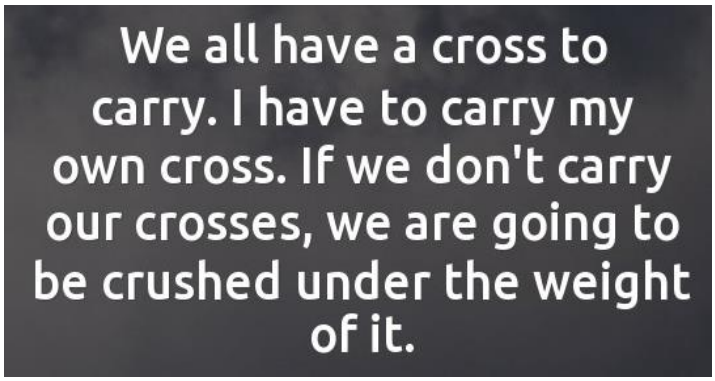

परमेश्वर का पर्वत एक अच्छे ख्रिस्ती जीवन का प्रतीक है। 2 पतरस 1:18 ''तब हम उसके साथ पवित्र पहाड़ पर थे और स्वर्ग से यही वाणी आते सुनी।'' एक अच्छा ख्रिस्ती हमेशा पर्वत पर ध्यान केंद्रित रहता है। यह परमेश्वर के पर्वत **(पर्वत होरेब)** पर है, जहां प्रभु ने इस्राएलियों को बंधन से मुक्त करने का निर्णय लिया। **कर्मेल पर्वत** वह पर्वत है जहाँ बाल के नबियों को एलिय्याह और परमेश्वर के नबियों द्वारा पराजित किया गया था। **मोरिय्याह पर्वत** को यहोवा यिरे के नाम से जाना जाता है – परमेश्वर देखेगा/उपाय करनेवाला। हमारे प्रभु यीशु मसीह स्वर्ग से इस दुनिया में आए, फिर भी उन्होंने देश के हर कानून का पालन किया। उन्हें यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले द्वारा पानी से बपतिस्मा दिया गया, और उस समय, स्वर्ग खुल गया, और प्रभु ने बात की। मत्ती 3:14–17 ''परन्तु यूहन्ना यह कह कर उसे रोकने लगा, "मुझे तो तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है?" यीशु ने उसको यह उत्तर दिया, "अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।" तब उसने उसकी बात मान ली। और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिए आकाश खुल गया, और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर आते देखा। और देखो, यह आकाशवाणी हुई : "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।'' यदि हम भी प्रभु के लिए 'कूड़ादान' बने रहें, तो हम उनकी सेवा कर सकते हैं। प्रभु यीशु इस संसार में पूर्ण धार्मिकता से रहे। जब हम पवित्र पर्वत पर उनके साथ होते हैं तो हम परमेश्वर के प्यारे बच्चे बन सकते हैं। भजन संहिता 42:2 ''जीवते ईश्वर, हाँ परमेश्वर, का मैं प्यासा हूँ, मैं कब जाकर परमेश्वर को अपना मुँह दिखाऊँगा?'' हमें प्रभु के लिए प्यासा होना चाहिए और उसके सामने आने के लिए बेचैन रहना चाहिए।

यूहन्ना 15:4–6 ''तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में। जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। मैं दाखलता हूँ : तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली के समान फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं।''

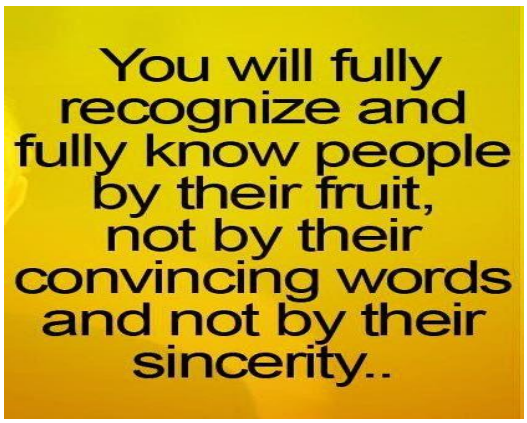

हम प्रभु के बिना कुछ नहीं कर सकते, न ही हमें उसके बिना कुछ करना चाहिए। यदि हम प्रभु के साथ जुड़े नहीं हैं, तो हम अधिक फल नहीं ला सकेंगे, और हम सूख जाएंगे और आग में डाल दिये जाएंगे। प्रभु कहते हैं, *'मेरे बिना कुछ*

भी मत करो।' प्रभु के बिना हमारा जीवन वास्तव में नरक होगा, और केवल उनके साथ ही हम उनके स्वर्गीय राज्य तक पहुंच सकते हैं।

हमने देखा है कि सदोम और अमोरा को आग से कैसे नष्ट कर दिया गया, क्योंकि इन देशों में पाप बहुत अधिक था। इसी प्रकार, यदि हम प्रभु में बने नहीं रहेंगे, तो वह हमारी सूखी डालियाँ को इकट्ठा करेंगे और हमें आग में डाल देंगे, जहां हम जला दिये जाएंगे। हमारा प्रभु अब हमें उनके साथ मिलकर बढ़ने की अनुमति देते है, लेकिन समय के अंत में, यह हमारा प्रभु है जो हमें अलग कर देंगे। हमारे अधर्मी आचरण से हमारा जीवन व्यर्थ नहीं होना चाहिए। प्रभु से हमारी प्रार्थना होनी चाहिए *'हे प्रभु , मेरा उपयोग करो, मैं आपके लिए कूड़ेदान बनना चाहता हूं!'*

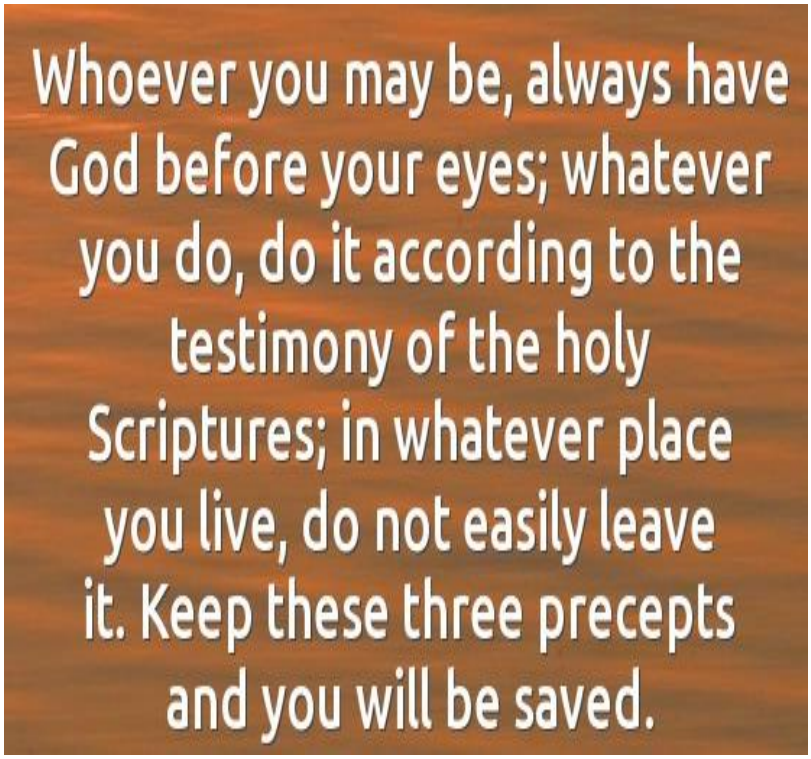

जब हम प्रभु को हर चीज से पहले रखते हैं, तो प्रभु के लिए हमारे जीवन में काम करना कुछ भी मुश्किल नहीं है। हम देखते हैं कि कैसे शिष्यों ने स्वर्ग से परमेश्वर की आवाज़ सुनी। मत्ती 17:1–8 ''छः दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लिया, और उन्हें एकान्त में किसी ऊँचे पहाड़ पर ले गया। वहाँ उनके सामने उसका रूपान्तर हुआ, और उसका मुँह सूर्य के समान चमका और उसका वस्त्र ज्योति के समान उजला हो गया। और मूसा और एलिय्याह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए। इस पर पतरस ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, हमारा यहाँ रहना अच्छा है। यदि तेरी इच्छा हो तो मैं यहाँ तीन मण्डप बनाऊँ; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।" वह बोल ही रहा था कि एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और उस बादल में से यह शब्द निकला : "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूँ : इस की सुनो।" चेले यह सुनकर मुँह के बल गिर गए और अत्यन्त डर गए। यीशु ने पास आकर उन्हें छुआ, और कहा, "उठो, डरो मत।" तब उन्होंने अपनी आँखें उठाईं और यीशु को छोड़ और किसी को न देखा।'' जब यीशु का रूपान्तरण हुआ तो पतरस के हृदय में क्या इच्छा थी? वह मूसा, एलिय्याह और यीशु प्रत्येक के लिए एक मण्डप बनाना चाहता था। तुरंत, उसने स्वर्ग से एक आवाज सुनी, *'यह मेरा प्रिय पुत्र है: उसकी सुनो'* हमें अपने प्रभु परमेश्वर को हमेशा सबसे आगे रखना चाहिए।

1 कुरिन्थियों 15:51–52 ''देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूँ : हम सब नहीं सोएँगे, परन्तु सब बदल जाएँगे, और यह क्षण भर में, पलक मारते ही अन्तिम तुरही फूँकते ही होगा। क्योंकि तुरही फूँकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएँगे, और हम बदल जाएँगे।'' पौलुस

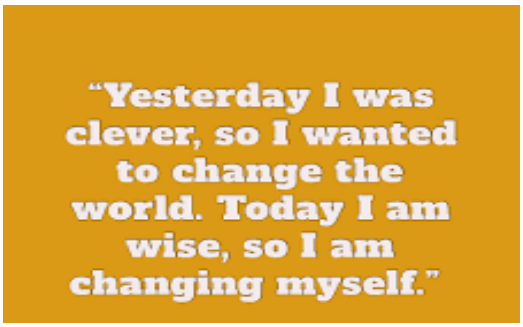

आखिरी तुरही के दौरान एक रहस्य के बारे में बात करते हैं, जहां हममें से कई लोग मरे नहीं होंगे, बल्कि सो रहे होंगे। यीशु के शिष्य पहाड़ पर चले, जहाँ पतरस, याकूब और यूहन्ना ने यीशु के रूपान्तरण के माध्यम से परमेश्वर की महिमा देखी। बाइबिल कहता है कि *'हममें से बहुत से लोग मरेंगे नहीं बल्कि बदल जाएँगे।'* भजन संहिता 48:2 ''सिय्योन पर्वत ऊँचाई में सुन्दर और सारी पृथ्वी के हर्ष का कारण है, राजाधिराज का नगर उत्तरी सिरे पर है।'' अपना ध्यान महान राजा के शहर सिय्योन पर्वत से कभी न हटाएँ। भजन संहिता 125:1 ''जो यहोवा पर भरोसा रखते हैं, वे सिय्योन पर्वत के समान हैं, जो टलता नहीं, वरन् सदा बना रहता है।'' जो लोग सिय्योन पर्वत पर ध्यान केंद्रित करते हैं उनका ध्यान प्रभु पर केंद्रित होगा, और उन्हें हटाया नहीं जा सकता। जिन लोगों को प्रभु में दृढ़ विश्वास नहीं है, वे डूब जाएंगे, जैसे पतरस, तब डूब गया जब उसने यीशु पर अपना ध्यान खो दिया और इसके बजाय समुद्र की ओर देखा, और मजबूत लहरों के कोलाहल से भयभीत हो गया। इसी तरह, हमें अपना ध्यान अपने प्रभु से नहीं हटाना चाहिए।

प्रकाशितवाक्य 14:1 ''फिर मैं ने दृष्टि की, और देखो, वह मेम्ना सिय्योन पहाड़ पर खड़ा है, और उसके साथ एक लाख चौवालीस हज़ार जन हैं, जिनके माथे पर उसका और उसके पिता का नाम लिखा हुआ है।'' जीवन की पुस्तक में हमारे नाम के बिना, हम सिय्योन पर्वत पर महल में प्रवेश नहीं कर सकते। हमें प्रभु के लिए अपने माथे को साफ और पवित्र रखना चाहिए क्योंकि वह हमारे माथे पर अपना नाम लिखेंगे। प्रभु की इच्छा के बिना हम कुछ नहीं कर सकते। हम अमीर आदमी और गरीब आदमी लाजर की कहानी जानते हैं। जब वे मर गए, तो अमीर आदमी नरक की आग में पहुंच गया, जबकि लाजर पहले सीधे स्वर्ग में अब्राहम की गोद में पहुंच गया था। फिर, हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में देखते हैं, कैसे यहुन्ना पहाड़ पर 1,44,000 लोगों को देखता है।

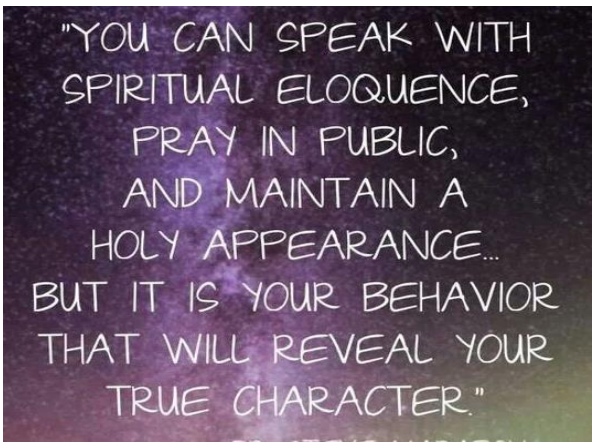

हम सभी के पास अपनी कुछ पहचान होती है – एक पासपोर्ट, एक पैन कार्ड, हमारे बाएं हाथ पर वैक्सीन का निशान, आदि। जब सरकार नियम बदलती है, तो हम नई नीति/नियम का पालन करने के लिए आवश्यक कदम उठाने के लिए इधर–उधर भागते हैं। याद रखें कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है, क्योंकि हमें आत्मा

को कान लगाना और सुनना चाहिए। सभी पाप क्षमा किये जा सकते हैं, परन्तु आत्मा के विरुद्ध किया गया कोई भी कार्य क्षमा नहीं किया जा सकता। आत्मा कलीसियाओं से बात करता है, जहाँ प्रभु कहते हैं, *'जिनके पास कान हैं वे सुनें।'*

यशायाह भविष्यवक्ता कहता है यशायाह 8:18 में ''देख, मैं और जो लड़के यहोवा ने मुझे सौंपे हैं, उसी सेनाओं के यहोवा की ओर से जो सिय्योन पर्वत पर निवास किए रहता है इस्राएलियों के लिये चिह्न और चमत्कार हैं।'' यशायाह कहता है कि वह और वे सन्तान जिन्हें यहोवा ने दिया है, इस्राएल में चिन्हों और चमत्कारों के समान रहते हैं। तीन वर्षों तक, भविष्यवक्ता यशायाह परमेश्वर की महिमा के लिए नग्न होकर चलता रहा। अदन के बगीचे में, आदम और हव्वा नग्न थे, लेकिन वे खुशी से रहते थे। हालाँकि, जिस क्षण उन्होंने पाप किया, उन्हें अपनी नग्नता का पता चला, और वे शर्मिंदा हुए, और प्रभु को आदम और हव्वा की नग्नता को ढकने के लिए उसकी खाल का उपयोग करने के लिए एक जानवर की बलि देनी पड़ी। प्रभु की महिमा में, हम नग्न नहीं हैं, लेकिन यह हमारे पाप हैं जो हमारी नग्नता को सामने लाते हैं।

भजन संहिता 2:6 ''मैं तो अपने ठहराए हुए राजा को अपने पवित्र पर्वत सिय्योन की राजगद्दी पर बैठा चुका हूँ।'' प्रभु ने हमारा अभिषेक किया है और सिय्योन पर्वत के लिए अपनी दृष्टि हम पर रखी है। किसी भी चीज़ से हमें पवित्र पर्वत से विचलित नहीं होना चाहिए। हम आम तौर पर नीचे देखते हैं. 'नीचे देखना' क्या दर्शाता है? यह नरक का प्रतीक है. हमें नीचे नहीं देखना चाहिए, बल्कि हमें ऊपर स्वर्ग की ओर देखना चाहिए। प्रभु ने हमें अपने लिए राजा और याजक बनने के लिए चुना। हमारे पिता परमेश्वर ने हम से बहुत प्रेम किया है। उसने हमें अपने बहुमूल्य लहू से धोया है और हमें उनके सामने खड़े होने के योग्य बनाया है। भजन संहिता 133:3 ''यह हेर्मोन की उस ओस के समान है, जो सिय्योन के पहाड़ों पर गिरती है! यहोवा ने तो वहीं सदा के जीवन की आशीष ठहराई है।'' इसलिए, जब भी इस्राएली वर्ष में एक बार परमेश्वर के पर्वत पर चढ़ते थे, तो वे स्तुति और आराधना के भजन गाते थे। परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त लोग जानते हैं कि अभिषेक क्या होता है, और वे सिय्योन पर्वत पर चढ़ जाते हैं।

हमारा परमेश्वर हमसे कभी कुछ नहीं लेंगे, बल्कि वह हमें बहुतायत से आशीष देंगे। परमेश्वर हमेशा देखेंगे कि हमने उनके राज्य के लिए उनकी किस प्रकार सेवा की है, और उनकी सेवा करते हुए हमें कितने अपमान और परीक्षणों का सामना करना पड़ा है। अपने अधर्म के कारण जीवन का मुकुट कभी मत खोना। कुल्हाड़ी पेड़ की जड़ पर रखी गई है, और जो फल नहीं लाएगा, वह काट डाला जाएगा और आग में

डाल दिया जाएगा। मत्ती 3:10 ''अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है, इसलिये जोदृजो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका जाता है।''

वचन सत्य और वास्तविक है। यह समय अपने भीतर आत्मनिरीक्षण करने और बेहतरी के लिए बदलाव का है। कुल्हाड़ी पेड़ की जड़ पर रखी जाती है और यदि उस पर फल नहीं लगे तो उसे काट दिया जाएगा। हमें हमेशा अपने प्रभु पर ध्यान केंद्रित रखना चाहिए और उनके राज्य के लिए लगन से काम करना चाहिए।

यह वचन आप सभी को आशीष दे,

पास्टर सरोजा म।